रिटर्न से ज्यादा भरोसे पर दांव लगा रहे निवेशक, म्यूचुअल फंड में बदल रही सोच

वरिष्ठ संवाददाता | मुंबई

भारत में म्यूचुअल फंड निवेशकों की सोच तेजी से बदल रही है। अब निवेशक सिर्फ बेहतर रिटर्न देखकर फंड नहीं चुन रहे, बल्कि फंड हाउस की साख, फंड मैनेजर की विश्वसनीयता और कंपनी के संवाद पर भी उतना ही भरोसा कर रहे हैं। एमिनेंस स्ट्रैटेजी कंसल्टिंग की रिपोर्ट 'रिप्यूटेशन ड्राइवर्स शेपिंग इन्वेस्टर ट्रस्ट इन म्यूचुअल फंड्स 2026' के मुताबिक, डिजिटल दौर में जब सूचनाएं आसानी से उपलब्ध है, निवेशकों के लिए भरोसा सबसे बड़ा निवेश संकेत बनता जा रहा है। एमिनेंस स्ट्रैटेजी कंसल्टिंग की मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) मितु समरनाथ झा का कहना है कि भारत का म्यूचुअल फंड उद्योग अब भरोसे के नए दौर में प्रवेश कर चुका है। भविष्य में केवल बेहतर रिटर्न देना पर्याप्त नहीं होगा, बल्कि पारदर्शिता, प्रभावी संवाद और मजबूत प्रतिष्ठा ही निवेशकों की दीर्घकालिक निष्ठा तय करेगी। रिपोर्ट के अनुसार, 71% निवेशक किसी स्कीम का चयन करते समय सबसे पहले उसके प्रदर्शन को देखते हैं। इसके बाद 49% निवेशकों के लिए फंड मैनेजर की विश्वसनीयता सबसे अहम होती है।

जेन जी पर खबर और सोशल मीडिया का प्रभाव

देश में म्यूचुअल फंड उद्योग का एसेट अंडर मैनेजमेंट (एयूएम) 81.6 लाख करोड़ रुपये के पार पहुंच चुका है। मासिक एसआईपी निवेश 30,594 करोड़ रुपये के रिकॉर्ड स्तर पर है और छोटे शहरों से भी बड़ी संख्या में नए निवेशक बाजार से जुड़ रहे हैं। इसके बावजूद निवेशकों के फैसलों में भरोसा सबसे बड़ा आधार बनकर उभर रहा है। अध्ययन के अनुसार 33% अपनी समझ से ज्यादा फंड हाउस की साख पर भरोसा करता है। युवा निवेशकों में यह प्रवृत्ति और अधिक स्पष्ट है। जेन-जी के 33% निवेशकों ने कहा कि यदि किसी फंड हाउस से जुड़ी विश्वसनीय नकारात्मक खबर सामने आती है, तो वे अच्छे रिटर्न मिलने के बावजूद अपना निवेश दूसरे फंड हाउस में स्थानांतरित करने पर विचार करते है। यह वर्ग निवेश के फैसले लेते समय सोशल मीडिया, साथियों की राय और कंपनी के नेतृत्व की सार्वजनिक छवि से अपेक्षाकृत अधिक प्रभावित होता है। आधे निवेशकों के फैसले वित्तीय सलाहकार, परिवार या परिचितों की राय से प्रभावित होते हैं।